|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 11. Mai 2025 | | |
| **4. Sonntag der Osterzeit C Weltgebetstag für geistliche Berufe** | | |
| Erste Lesung: Apg 13,14.43b-52; Zweite Lesung: Off 7,9.14b-17; Evangelium: Joh 10,27-30 | | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 332, 1+2+5+6 | Die ganze Welt, Herr Jesu Christ |
|  | GL 324, 1-4 | Vom Tode heut erstanden ist |
|  | GL 318, 1-3 | Christ ist erstanden |
|  | GL 140, 1-3! (Nachfolge) | Kommt herbei |
|  | GL 713, 1-3 (Nachfolge) | Du hast uns, Herr, gerufen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie |
|  | GL 163, 7 | Herr Jesus, du rufst |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 168, 1+2 | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 100, 1-5 |  |
|  | Kehrvers: GL 56, 1 | Freut euch |
|  | Psalmlied GL 144, 1-3+6 | Nun jauchzt dem Herren |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Ich bin der gute Hirt.* |  |
|  | *Ich kenne die Meinen und die Meinen kennen mich.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 421, 1+3 | Mein Hirt ist Gott, der Herr |
|  | GL 366, 1-3 | Jesus Christus, guter Hirte |
|  | GL 477, 1+3 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  | GL 146, 1+2+4! (Nachfolge) | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  |  |  |
| Credo | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 803, 1+6 | Christen, singt |
|  | GL 808, 8 | Guter Hirt, du wahre Speise |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 752, 3 | Dir danken nun, Herr Jesus Christ |
|  | GL 772, 1+5 | Gelobt sei Jesus Christus |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 487, 4+5 | Du guter Hirt, Herr Jesu Christ |
|  | GL 525, 1-4 | Freu dich, du Himmelskönigin |
|  | oder ein anderes Marienlied | |